कुल गीत

मुधर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी ।
यह तीनों लोकों से न्यारी काशी।
सुज्ञान धर्म और सत्यराशी ।।
बसी है गंगा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी । मुधर । 1।

नये नहीं हैं ये ईंट पत्थर।
हैं विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर, यह सर्वसृष्टि की राजधानी । मुधर । 2।

यहीं की है यह पवित्र शिक्षा।
कि सत्य पहले फिर आत्म–रक्षा।।
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर, यह सत्य शिक्षा की राजधानी । मुधर । 3।

वह वेद ईश्वर की सत्यबानी।
बने जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी।।
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्–विद्या की राजधानी । मुधर । 4।

वह मुक्तिपद को दिलानेवाले।
सुधर्म पथ पर चलाने वाले।।
यहीं फले फूले बुद्ध शंकर,यह राज ऋषियों की राजधानी । मुधर । 5।

सुरम्य धाराएँ वरूणा असी।
नहाएँ जिनमें कबीर तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों न आकर,यह वाक्विद्या की राजधानी । मुधर । 6।

विविध कला अर्थशास्त्र गायन।
गणित खनिज औषधि रसायन।।
प्रतीचि–प्राची का मेल सुन्दर, यह विश्वविद्यालय की राजधानी । मुधर । 7।

यह मालवी जी की देशभक्ति।
यह उनका साहस यह उनकी शक्ति।।
प्रगट हुई है नवीन होकर,
यह कर्मवीरों की राजधानी।
मुधर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी । मुधर । 8।